RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 November 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd November 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : सातवां
नवम्बर : 2019

एक शब्द (धन धन सतगुरु मेरा)	4
सुख-दुख (सतसंग)	5
भजन-अभ्यास (गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश)	29
कथनी - करनी (अनमोल वचन)	31

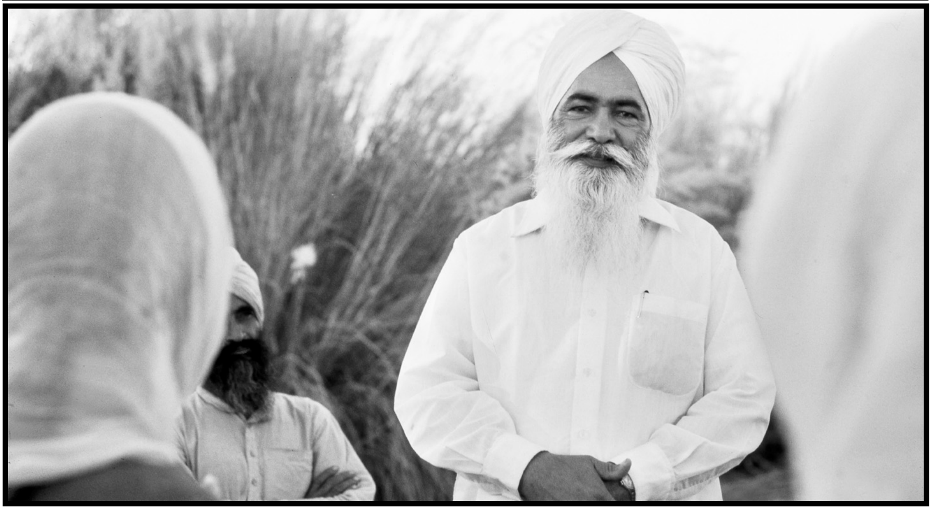

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04   99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **रेनू सचदेवा**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71   80 79 08 46 01   - 212-   मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com   Website : www.ajaibbani.org

धन-धन सतगुरु मेरा

धन–धन सतगुरु मेरा, जेहड़ा विछड़ेयां नूं मेलदा, (2)

1. जैसा सतगुरु सुणी दा, (2) तैसो ही मैं डीठ,
   जेहड़ा विछड़ेयां नूं मेलदा

2. विछड़ेयां मेले प्रभु, (2) हर दरगाह दा बसीठ,
   जेहड़ा विछड़ेयां नूं मेलदा

3. हरनामो मंत्र दरड़ाऐंदा, (2) कट्टे होमैं रोग,
   जेहड़ा विछड़ेयां नूं मेलदा

4. 'नानक' सतगुरु तिन्हां मिलाया, (2) जिन धुरों पया संजोग,
   जेहड़ा विछड़ेयां नूं मेलदा

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सुख–दुख

गुरु नानक देव जी की बानी DVD-50 दिल्ली

परमात्मा जब दया करता है अपनी बख्शिश करता है सबसे पहले हमें इंसानी जामे में लेकर आता है। परमात्मा इंसानी जामे में उन्हीं आत्माओं को लेकर आता है जिन्हें वह मौका देना चाहता है कि ये भक्ति करके मुझसे मिल सकें। हर जीव पिछले कर्म भोगने के लिए मजबूर है। जो प्रालब्ध बन चुकी है भले ही हम रोएं या चिल्लाएं हमें वे कर्म भोगने ही पड़ते हैं। हमें शरीर में बैठकर **सुख** भी भोगना पड़ता है और **दुख** भी भोगना पड़ता है। जिस तरह शरीर के ऊपर मैला या सफेद कपड़ा है उसी तरह हम जिंदगी में सुख और दुख भोगते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सात द्वीप नौखंड में तीन लोक ब्रह्मांड।
कहे कबीर सबको लगे देह धरे का दंड।।
देह धरी का दंड, सब काहूँ को होए।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से, अज्ञानी भोगे रोए।।

देह धारने का दंड सबको भोगना पड़ता है। हम दुनियादार जीव रोते-चिल्लाते हुए भोगते हैं लेकिन मालिक के प्यारे परमात्मा के शुक्रगुजार होते हैं। अगर हम परमात्मा का भाणा मानें अपने मन को समझाएं कि जो कुछ तूने किया है तुझे वही मिल रहा है।

बिन किया लागे नहीं, किया न बिरथा जाए।

हमनें जो कुछ किया है हमें वही मिलना है। जैसे ईख बीजते हैं मीठा खा लेते हैं मिर्चें बीजते हैं मुँह कड़वा हो जाता है लेकिन यह फसल तो हमारी ही बीजी हुई है। जब हम इंसानी जामे में आते हैं तो हमें पिछले कर्म भोगने ही पड़ते हैं लेकिन आगे के लिए हम

स्वतंत्र हैं। हम अच्छा या बुरा जैसा जीवन बनाना चाहे बना सकते हैं, यह हमारे अपने हाथ में है। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

कीता पाइए आपणा ते घाल बुरी क्यों घालिए।

अगर आपने अपने किए हुए कर्म ही भुगतने हैं तो बुरे कर्म क्यों बना रहे हैं? आप फिर कहते हैंः

आपन हत्थी आपना आपे ही जन्म संवारिए।

जो कुछ करना है हमने खुद ही करना है लेकिन हमारा जानी दुश्मन मन हमें परमात्मा की भक्ति और परमात्मा के प्यार की तरफ जाने ही नहीं देता; हमने जो काम इंसानी जामे में करना है, मन उस तरफ तवज्जो ही नहीं जाने देता। जिस तरह पशु खाकर सो जाते हैं भोग भोगते हैं उम्र व्यतीत कर जाते हैं, उसी तरह बेचारा इंसान भी कर्म भोगकर चला जाता है।

सन्त-महात्मा हमें बड़े प्यार से समझाते हैं कि परमात्मा एक है, वह सबके अंदर है और माया से रहित है। जो महात्मा माया और परमात्मा के बारे में खोज कर लेते हैं, वे विवेक-बुद्धि से दोनों में फर्क समझ लेते हैं। वे महात्मा हमें बताते हैं कि परमात्मा आपके अंदर है, हर घट में रहता हुआ मैल से गंदा नहीं होता लेकिन अलग भी है। महात्मा हमें परमात्मा से जोड़ने के लिए ही आते हैं।

जिन महात्माओं ने माया और परमात्मा के बारे में खोज की है वे हमें बताते हैं कि जिन पर उसकी दया होती है वे उसे पहचान लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों के पास कई किस्म के जीव आते हैं। कोई सच्चे दिल से प्यार लेकर आता है वह सन्त और परमात्मा को एक ही समझता है। कोई उन्हें शरीफ इंसान समझता है, कोई फिलोस्फर, कोई अच्छा लेक्चरार

और कोई पाखंडी समझता है। सबका अपना-अपना नजरिया होता है। यह सब अपनी आँखों का सवाल है, आँखों पर जैसा शीशा लगा है वैसी ही धरती नजर आती है। महात्मा शीशा होते हैं हमारी किरणें उनसे टकराती हैं जैसा हमारा चेहरा है हमें भावना के मुताबिक वैसा ही दिखाई देता है।'' कबीर साहब कहते हैं:

कोई आए भाव ले कोई ले अभाव।
सन्त दोहां नूं पोसदे भाव न गिने अभाव।।

महात्मा के द्वार पर बेशक कोई उनके लिए प्यार लेकर आए, कोई दिल में दुविधा लेकर आए या कोई उनके लिए बुरा सोचे लेकिन महात्मा सबके साथ प्यार करते हैं। महात्मा की नजर आत्मा पर होती है, आत्मा निर्दोष है बुराई हमारे मन में है। महात्मा तो अपराधियों, चोरों, ठगों को भी अपनी दया से वंचित नहीं रखते। महात्मा जानते हैं कि पाप की दलदल के नीचे दबी हुई आत्मा शुद्ध है। जब इस आत्मा के अंदर नाम रखेंगे तो यह जरुर सुधर जाएगी, साफ हो जाएगी। गुरु नानकदेव जी कहते है:

सच पुराणां न थिया, नाम न मैला होय।

मैल नाम को खराब नहीं कर सकती। जिस तरह साबुन कपड़े की मैल निकालता है उसी तरह गुरु का नाम हमारी जन्म-जन्मांतर की मैल को निकालता है। सन्त-सतगुरु बड़े ही धीरजवान पुरुष होते हैं, उनके अंदर बड़ा ही सब्र और भरोसा होता है। वे भरोसा लेकर चलते हैं उन्हें पता होता है कि सेवक अंजान बच्चे की तरह है; मैंने इसकी जिंदगी बनानी है, वे हर तरह से कोशिश करते हैं।

सन्त, सेवक की जिंदगी बनाने के लिए उसके मुताबिक प्लेनिंग करते हैं। हमें पता नहीं कि किस चीज में हमारा फायदा है और किस चीज में हमारा नुकसान है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन तुध होर जे मंगणां, सिर दुखां दे दुख।
दे नाम संतोखिया, उतरे मन की भुख।।

हम अन्धों को यह नहीं पता कि हमें किस चीज़ की जरुरत है, कौन सी चीज हमारे लिए फायदेमंद है? आमतौर पर हम मन के कारण दुखी हुए बैठे हैं। पहले हम कोई वस्तु माँगते हैं जब वह वस्तु मिल जाती है हम फिर भी खुश नहीं होते क्योंकि संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसमें **सुख** हो। जब उस वस्तु से दुखी होते हैं फिर भगवान से फरियाद करते हैं कि इससे हमारी जान छुड़वा।

मैंने ऐसे बहुत से वाक्य देखे हैं जिन परिवारों में बच्चे पैदा नहीं होते वे बच्चों के लिए अरदास करते हैं और बच्चे पैदा हो जाते हैं। जब बच्चा कहे अनुसार नहीं होता तब भी माता-पिता खुश नहीं होते। अगर परमात्मा उसे वापिस बुला ले तो भी माता-पिता दुखी होते हैं। लड़के की शादी हो जाती है और दूसरी लड़की घर आ जाती है, सबका अपना-अपना स्वभाव होता है। स्वभाव तो किसी से किसी का नहीं मिलता। जब उसका हमारे साथ मेल नहीं मिलता तो भले ही हमारी गलती क्यों न हो हम परेशान हो जाते हैं।

आमतौर पर हमारी आदत है कि हम अपने अहम और कमी की तरफ नहीं देखते दूसरों के अवगुण की तरफ ध्यान देते हैं, कमी हमारे अंदर होती है। सबसे पहले हमने अपनी कमी देखनी है और दूसरों के गुण देखने है।

हमारे गंगानगर का वाक्या है कि एक कपड़े रंगा हुआ साधु महाराज कृपाल के पास आया। कुछ लोगों ने उसे महाराज जी से मिलने के लिए रोका। महाराज कृपाल ने कहा, ''इसे अंदर आने दें।'' जब वह आदमी अंदर आया तो महाराज जी ने उसे कुर्सी पर बिठाया। जब वह कपड़े रंगा हुआ साधु चला गया तो एक आदमी

से रहा नहीं गया, उसने कहा, ''यह माँगकर खाता है लोगों को दिखाने के लिए इसने अपने कपड़े रंगे हुए हैं।'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''इसने कुछ तो किया है, परमात्मा का खौफ तो रखता ही है।'' कहने का भाव उनकी नजर आत्मा पर थी।

महात्मा हमें बताते हैं कि परमात्मा सारी दुनिया की रचना करके दुनिया में इस तरह बैठ गया है जिस तरह दूध के अंदर घी है, मेंहदी के अंदर रंग है, फूल के अंदर खुशबू है। परमात्मा सबके अंदर रहते हुए भी न्यारा है। महात्मा परमात्मा के बारे में बताने के लिए ही संसार में आते हैं। हम हर जगह उस परमात्मा की खोज करते हैं। कोई पहाड़ो में परमात्मा की खोज करता है, कोई बड़े-बड़े मन्दिरों और मस्जिदों में परमात्मा की खोज करता है। हम दिन-रात ही परमात्मा की खोज कर रहे हैं।

हम पढ़-पढ़ाई करते हैं लेकिन हमने कभी यह नहीं सोचा कि ये जगह क्यों बनाई गई? आप उन जगहों की हिस्ट्री पढ़कर देखें! वहाँ कोई न कोई महात्मा पैदा हुआ। हम कुलेत में जाते हैं वहाँ कपिल मुनि हुए, उन्होनें वहाँ पर नाम का अभ्यास किया। जहाँ महात्मा के चरण पड़ जाते हैं वह जगह पूजने के काबिल हो जाती है लेकिन हमनें कभी यह नहीं सोचा कि कपिल मुनि कैसे बना, उन्होंने ये पदवी कैसे हासिल की?

हम हरिद्वार जाते हैं हमने कभी यह नहीं सोचा कि गंगा तो पंद्रह सौ मील लंबी बह रही है सिर्फ इतने ही स्थान की महानता क्यों है? वहाँ पर रामचन्द्र जी ने तप-अभ्यास किया था। जब लोग उनके पास जाते थे तो आप उन्हें अच्छी शिक्षा देते और उन्हें परमात्मा की ओर प्रेरित करते थे। आज तीर्थ स्थानों पर लोग मेलों की शक्ल में इकट्ठे होते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

ईक भौ लत्थी न्हातेयां, दो भौ चड़ियस होर।

हम लोग तीर्थों पर पाप उतारने के लिए जाते हैं लेकिन पाप करके आ जाते हैं। आपको जिस परमात्मा की खोज है वह आपके अंदर बैठा है। आप अपने ख्यालों को बाहर से हटाकर अपने अंदर झाँककर देखें! परमात्मा आपके अंदर ही बैठा है।

आद निरंजन प्रभ निरंकारा।। सभ मह् वरतै आप निरारा।।
वरन जात चेहन नहीं कोई सभ हुकमे सृसट उपाएंदा।।

आप कहते हैं, ''परमात्मा ने न कोई जाति बनाई है न कोई कौम बनाई है और न ही किसी जाति को यह फक्र दिया है कि मुझसे सिर्फ हिन्दु मिल सकते हैं सिक्ख नहीं मिल सकते या मुस्लमान मिल सकते हैं ईसाई नहीं मिल सकते।''

जाति पाति पूछे न को, हरि को भजे सो हरि का हो।

आप कहते हैं, ''वहाँ पर किसी की जाति नहीं पूछते कि आप किस जाति के हैं? वहाँ परमात्मा ने हमारी हरकतें और हमारे अमल देखने हैं।'' महात्मा हमें बताते हैं कि जब सूरज की कोई जाति नहीं तो किरण की क्या जाति हो सकती है, जब परमात्मा की कोई जाति-मजहब नहीं तो आत्मा की क्या जाति हो सकती है? हमारी वही जाति और वही मजहब है जो परमात्मा का है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''समाजें हमनें मन के पीछे लगकर बनाई हैं, ये सब मन के बनाए हुए डिजाइन हैं। हम मन के कहे मुताबिक रिश्ते-नाते करते हैं इनका रिश्ता लगाव सिर्फ हमारे शरीर के साथ हैं।'' कबीर साहब कहते हैः

डूबोगे रे बाप रे बहो लोगन की कान।
तब कुल किसका लाज सी जब चक धरयो मसान।।

चाहे किसी भी जाति में पैदा हो जाएं हर किसी की मौत एक ही तरीके से होती है। किसी की जाति-पाति आग में जलाई जाती है और किसी की जाति मिट्टी में दफन की जाती है। आप जाति-पाति के चक्करों में एक-दूसरे के खून के प्यासे बने फिरते हैं क्यों किसी को बुरा-भला कहते हैं? अगर आप परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो ये सब चीजें परमात्मा को परवान नहीं। परमात्मा ने कोई जाति-पाति, कौम नहीं बनाई। कबीर साहब कहते हैः

गगन दोआमा बाजया पड़या निशाने घाव।
खेत जो मांडे सूरमा अब जूझन का दाव।।

सच्चखंड से उठकर आवाज कहाँ आ रही है? वह मैदान हमारा माथा है। यहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ जो हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी के अंदर है। जब आप इनसे ऊपर जाएंगे तो वहाँ इनका नामोनिशान नहीं है। हम इंसानी जामे में बैठकर ही इनके साथ जूझ सकते हैं। जिन लोगों ने इन पाँच डाकुओं के साथ युद्ध किया है वही जानते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नेह ते पँज जवान जिओ, गुरु थापी दित्ती कंड जिओ।

सतगुरु शिष्य की पीठ पर होता है। ये पाँचो जवान पहलवानों की तरह हमें घेरने के लिए आते हैं। हमें इन पहलवानों के बारे में पता होता है अगर ये पहलवान न हों तो हम किसे गिराएंगे? हम इनके सामने मुर्दे हुए बैठे हैं। कबीर साहब कहते हैं:

मन मरीद संसार है, गुरु मरीद कोई साध।
जिन ऐसा कर बूझेया ताँका मता अगाध।।

मुर्दे को मरीद कहते हैं। मुर्दे में यह शक्ति नहीं कि वह कहे कि मुझे दही के साथ नहलाएं, सीधा करके नहलाएं या मेरे ऊपर

मिट्टी न डालें, यह नहलाने वाले की मर्जी है। हमारी यह हालत है कि हम मन के पीछे लगे हुए हैं। चाहे मन हमें किसी से लड़ाए, झगड़ा करवाए या किसी से प्यार करवाए; हम विषय-विकारों में फँसे हुए हैं हम मन की बात मानते हैं गुरु की बात नहीं मानते।

महाराज सावन सिंह जी एक दिन गुरु गोबिंद सिंह जी की मिसाल दे रहे थे कि गुरु गोबिंद सिंह जी अपने सतसंग में कह रहे थे, ''गुरु का भक्त कोई-कोई ही होता है। आमतौर पर कोई औरत का भक्त है, कोई माया का भक्त है तो कोई देश का भक्त है।'' एक शिष्य उठा और उसने कहा, ''महात्मा जी! मैं तो आपका शिष्य हूँ। मैं न औरत का शिष्य हूँ और न ही माया का शिष्य हूँ।''

गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''हाँ भई! बड़ी अच्छी बात है। हमें कपड़े के एक ऐसे थान की जरुरत है जो बाजार में न मिलता हो, अच्छे से अच्छा थान लेकर आना।'' वह शिष्य बाजार गया उसने अच्छे से अच्छे कपड़े का थान खरीदा और अपने घर लेकर आ गया। उसकी औरत ने थान देखा और बोली, ''यह क्या है?'' उस शिष्य ने जवाब दिया, ''यह कपड़े का थान मैं गुरु साहब के लिए लाया हूँ, ऐसा और थान बाजार में नहीं है।''

औरत ने कहा, ''यह थान तो मुझे चाहिए तुम महाराज जी से कह देना कि अभी थान मिला नहीं मैं खोज रहा हूँ, इस थान की तो मुझे जरुरत है।'' आखिर उसके दिल में ख्याल आया कि यह जो कह रही है वह ठीक है। गुरु कौन सा जानते हैं! औरत ने थान ले लिया। वह सतसंग में गया तो महाराज जी ने कहा, ''क्यों भई! तू वह कपड़ा लाया जो तुझे बोला था।'' वह बोला, ''अभी मिला नहीं मैं खोज रहा हूँ।'' औरत ने थान निकालकर आगे रख दिया और बोली, ''यह आपका शिष्य नहीं यह मेरा शिष्य है।''

आप देखें! लोग आपसी मेल बढ़ाकर दूसरी जाति पर हमला करने के लिए तैयार रहते हैं। कोई ऐसा है जो कहे कि हम सबका परमात्मा एक है, आत्मा भी एक है और हमारी जाति भी एक है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं आओ! हम सब मिलकर भक्ति करेंः

एक पिता एकस के हम बारक।

हम महात्मा के संदेश को भूल जाते हैं। हमें अपने दिल में अच्छी तरह झाँककर देख लेना चाहिए कि परमात्मा का कोई वर्ण नहीं जाति नहीं चिह्न नहीं। वह दुनिया की रचना नाम के जरिए ही पैदा करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नामे ही ते सब कुछ होय, बिन सतगुरु नाम न जापे।

नाम ने ही सब कुछ पैदा किया है और नाम ही सबकी संभाल कर रहा है लेकिन नाम का भेद, नाम की पूँजी हमें साधु-सन्तों और महात्माओं से मिल सकती है।

लक्ख चौरासी जोन सबाई।। माणस कौ प्रभ दी वड्याई।।
इस पौड़ी ते जो नर चूकै सो आय जाय दुख पाएंदा।।

गुरु साहब कहते हैं, ‘‘परमात्मा ने लाख चौरासी योनियां पैदा करके इंसानी जामें को बड़ाई दी है। इस जामें में कोशिश करके हम परमात्मा से मिल सकते हैं और इस जामें में आने का मकसद पूरा कर सकते हैं।’’ मनुष्य योनि सीढ़ी का आखिरी स्टेप है कोशिश करके छत पर चढ़ जाते हैं अगर पैर फिसल जाए तो जमीन पर आ गिरते हैं। हम इंसानी जामें में कोशिश करके नाम की भक्ति कर सकते हैं परमात्मा से मिल सकते हैं अगर गलती करते हैं तो उसकी सजा नीचे की योनियों में चले जाते हैं। जीव आता-जाता है जन्मता-मरता है कष्ट में जिंदगी गँवाता है।

**कीता होवै तिस क्या कहीऐ।। गुरमुख नाम पदारथ लहीऐ।।
जिस आप भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसह् बझाएंदा।।**

अब आप कहते हैं, ''जिस परमात्मा के इशारे पर सारी दुनिया खड़ी है चल फिर रही है यह उसी की ताकत काम कर रही है उसे हम क्या समझा सकते हैं।'' हम जीव भूलकर भजन-अभ्यास तो चार-पाँच मिनट ही करते हैं अरदास में घंटा लगा देते हैं, परमात्मा से कहते हैं कि मेरी औलाद को ठीक कर।

मैं बताया करता हूँ कि कोलम्बिया में यह रिवाज है कि वहाँ के प्रेमी जब मेरे पास इंटरव्यू के लिए आते हैं तो वे कहते हैं कि हमारे बच्चों को आशीष दें; नानके-दादके को भी आशीष दें अगर किसी औरत के पेट में बच्चा है तो वहाँ भी हाथ रखवाते हैं कि आत्मा शरीर में आई हुई है इसे भी आर्शिवाद दें। महात्मा सब्र वाले होते हैं। जब हम भजन में बैठते हैं तो परमात्मा के आगे अरदासें करने में कितना समय लगा लेते हैं कि हे परमात्मा! तू हमारा यह काम भी कर वह काम भी कर।

ये ख्वाहिशें हमारे अंदर मन पैदा करता है, मन के पीछे लगकर हम यह बातें सतगुरु से पूरी करवाना चाहते हैं। हम गुरु की भक्ति करते हैं या मन की भक्ति करते हैं? महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''**सुख-दुख**, अमीरी-गरीबी, तंदरूस्ती-बीमारी आपकी प्रालब्ध पैदा होने से पहले ही बन गई है। वक्त आने पर घटना घट जाती है जीव को पता नहीं इसलिए लाचार है दुखी है।''

हम परमात्मा को क्या समझा सकते हैं? हम खुद समझने की बजाय परमात्मा को समझाने में लगे हुए हैं। हम परमात्मा से कहते हैं कि तू ऐसे कर, वैसे कर। गुरुमुख लोग परमात्मा के प्यारे

होते हैं। वे इस दुनिया में आकर खुद नाम की कमाई करते हैं और हमें भी नाम की कमाई की तरफ प्रेरित करते हैं।

हरख सोग का नगर एह कीआ।। से उबरे जो सतगुर सरणीआ।।
त्रिहां गुणां ते रहै निरारा सो गुरमुख सोभा पाएंदा।।

सन्त-सतगुरु इस दुनिया को पुण्य और पापों की नगरी कहकर ब्यान करते हैं। हमारे पुण्य और पापों को मिलाकर हमें इंसान का जामा मिलता है। अगर हमने पुण्य ही किए होते तो हम स्वर्ग में बैठे होते अगर पाप ही किए होते तो हम नरक में सड़ रहे होते। कुछ पुण्य मिले कुछ पाप मिले तो हमें इंसान का जामा मिला।

जब हमें पुण्यों का ईनाम मिलता है तब हम तंदरूस्त होते हैं धनी होते हैं और हमें हर किस्म की शान्ति होती है। जब पापों का बदला चुकाना पड़ता है तब हमें हर किस्म के रोग, कष्ट और तकलीफ सहनी पड़ती है। हमनें पुण्य और पापों की नगरी में आकर जन्म ले लिया है। अब हम ऐसी नगरी में पैदा हो गए हैं यहाँ सुख-शान्ति कहाँ है?

त्रह गुणां ते रहे नरारा, ते गुरुमुख सोभा पाएंदा।

गुरुमुख को सहज समाधि प्राप्त हो जाती है। वह मालिक के दरबार में सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से ऊपर चला जाता है। मालिक के प्यारे इस तरह की स्थिति पैदा कर लेते हैं जिससे उन पर खुशी, निन्दा-चुगली का कोई असर नहीं होता। ऐसे महात्मा अटल विश्वास लेकर चलते हैं। वे जानते हैं कि मालिक के हुक्म के बिना पत्ता तक नहीं हिलता। वे मालिक के हुक्म में आते हैं और मालिक के हुक्म में ही रहते हैं। पल्टू साहब कहते हैं:

राम के घर में काम सब सन्तां करदे, तैंतिस करोड़ देवता सन्त ते सभी डरते।

वे परमात्मा के दरबार में जाकर शोभा पाते हैं। परमात्मा के घर में सब काम सन्त ही करते हैं वे ही उनके कारकून होते हैं। जिन्होंने परमात्मा को पूज लिया उन्हें कोई देवी-देवता तंग नहीं कर सकता। सन्त अपने बच्चों को परमात्मा की भक्ति में लगा देते हैं, सन्त उन्हें अपने साथ नहीं बल्कि शब्द-नाम के साथ जोड़ते हैं। चाहे आप उसे शब्द नाम, रब्बी बानी या धुर की बानी कहें।

मैं महाराज सावन के समय में देखता रहा हूँ अगर वहाँ किसी को भूत-प्रेत चिपटा होता तो वह उसे छोड़ देता, सतसंग के करीब आने का तो कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था।

77 आर.बी. में जहाँ से हमारे गाँव की हद शुरू होती थी वहाँ से भूत आगे नहीं आता था। भूत कहता था कि मैं आगे नहीं जाऊँगा। आज मैं 16 पी.एस. में बैठा हूँ। इधर नहर का पुल है वहाँ पुल पर ही भूत कह देता है कि मैं आगे नहीं जाऊँगा, तू चला जा। अगर उस जीव को नाम मिल जाता है तो भूत उसका पीछा छोड़ देता है नहीं तो भूत पुल पर ही बैठा है उसे फिर चिपट जाता है।

मेरे कहने का भाव है कि जो पवित्र आत्माएं शब्द-नाम की कमाई करती हैं उनके नजदीक भटकी हुई आत्माएं नहीं जा सकती। मैंने ऐसे बहुत से लोग देखे हैं जिनको जंजीरों में बाँधा होता है लेकिन जब वे हमारी हद में आते हैं तो उनकी जंजीरे खुल जाती हैं। वे भूत-प्रेत रोते हैं, मिन्नतें करते हैं कि हमें कुछ मत कहें हम इनको दोबारा नहीं पकड़ेंगे। ये भूत-प्रेत सन्तों के सेवकों को कुछ नहीं कहते। कबीर साहब कहते हैः

जे घर साध ना सेवइए, हर की सेवा नाहें।
ते घर मरहट साकते भूत बसे तिस माहें।।

जिस घर में नाम-शब्द की कमाई नहीं की जाती उस घर में रहने वाले इंसान भी भूतों की तरह हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

जे साधु गोबिंद भजन कीर्तन नानक नीत।
ड़े हूँ ड़े तू ड़े छुटे निकट न जायो दूत।।

धर्मराज अपने सेवकों को पहले ही हिदायत कर देता है कि जो नाम लेकर नाम की कमाई करता है आप लोग उसके नजदीक मत जाना। अगर किसी नामलेवा को भूलकर भी तंग किया तो न मैं छूट सकता हूँ और न तुम लोग ही छूट सकते हो।

मैं आपको कई दफा तुलसी साहब का हिरदे के साथ जो संवाद हुआ है वह सुनाया करता हूँ। अगर धर्मराज गलती से सन्तों की आत्मा को पकड़कर नर्क में डाल देता है तो सन्त अपनी आत्मा को छुड़ाने के लिए नर्कों के नर्क खाली कर देते हैं। राजा जनक ने नर्कों के कुंड खाली कर दिए। आप गुरु नानकदेव जी का ग्रंथ पढ़कर देखें कि उन्होनें किस तरह अपनी एक आत्मा को छुड़ाने के लिए नर्कों को खाली कर दिया।

महाराज सावन सिंह जी के समय का एक वाक्या है कि एक आत्मा नर्क में चली गई। बाबा जयमल सिंह जी ने महाराज सावन को बताया कि फलानी आत्मा नर्क में चली गई है। बाबा जयमल सिंह जी ने महाराज सावन की ड्यूटी लगाई कि उसे नर्क से लेकर आ। महाराज सावन सिंह जी ने उस आत्मा को आवाज लगाई, ‘‘क्या तुझे सिमरन याद है?’’ उस आत्मा ने कहा, ‘‘मुझे सिमरन याद नहीं।’’ फिर उससे पूछा, ‘‘तुझे गुरु का स्वरुप आता है?’’ उस आत्मा ने कहा, ‘‘नहीं’’। फिर उस आत्मा से पूछा, ‘‘क्या तुझे मेरी आवाज सुनाई दे रही है?’’ उस आत्मा ने कहा, ‘‘हाँ आवाज सुनाई दे रही है।’’ तू आवाज सुनकर मेरे पीछे चली आ। उस

आत्मा ने कहा, ''अब मुझे सिमरन भी याद है और सतगुरु का स्वरूप भी आ गया है, मैं अपनी आँखों से देख रही हूँ कि नर्कों में जीव किस तरह कुरला रहे हैं कष्ट भोग रहे हैं।''

काल सन्तों की आत्मा को ग्रहण नहीं करता। हम जब सन्तों की संगत में जाते हैं तो सन्त हमारे ख्याल बदल देते हैं। वे हमें नाम-शब्द की ओर प्रेरित करते हैं। तीनों गुणों से ऊपर जाकर ही गुरुमुख लोग शोभा पाते हैं।

अनिक करम कीए बहुतेरे।। जो कीजै सो बंधन पैरे।।
कुरुत्ता बीज बीजे नहीं जंमै सभ लाहा मूल गवाएंदा।।

गुरु नानकदेव जी ने हिन्दुस्तान से बाहर भी पैदल चलकर यात्रा की। उस समय आने-जाने के साधन बहुत कम थे। आपने लोगों को जाकर समझाया कि आप जो कर्मकाण्ड कर रहे हैं इससे आप अपने बंधन और सख्त बना रहे हैं, सुरत-शब्द के अभ्यास के बिना आप परमात्मा को नहीं पा सकते।

हम बे-मौसमा बीज उगा रहे हैं। हम जानते हैं कि हिन्दुस्तान में मई और जून के महीने बहुत गर्म होते हैं अगर हम मई-जून के महीने में गेहूँ की फसल बीजें चाहे हम कितना भी पानी लगाएं, खाद डालें चाहे जमीन पर कितना भी हल चला ले तो फसल कभी भी पककर घर नहीं आ सकती। किसान जानता है कि बीज नवम्बर-दिसम्बर में बीजा जाता है तब फसल पककर हमारे घर आती है उसी तरह हमारे कर्मकाण्ड या रीति-रिवाज कुरुता बीज हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते है कि मुक्ति सिर्फ नाम में है। मौसम का बीज नाम है। अपने-अपने युग का धर्म होता है। सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलयुग है। वेदों-शास्त्रों में सतयुग की उम्र लाखों वर्ष

होती थी। अगर किसी ने एक हजार साल पूजा-पाठ कर लिया तो नब्बे हजार साल बचे हुए हैं। इसी तरह त्रेता युग में हमारी उम्र दस हजार साल दर्ज है। उस वक्त हमारी सेहत बहुत अच्छी थी और हम थोड़े से साधनों से जमीन पर अन्न पैदा कर लेते थे।

आज किसानों को पता है कि अन्न पैदा करने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। इंसान के ख्याल भी चारों ओर फैल गए हैं, हमारी सेहत कमजोर हो गई है। पचास साल की उम्र में ही हमारे घुटने, दाँत जवाब दे जाते हैं। किसी में इतनी ताकत नहीं कि वह एक घंटा चौकड़ी लगाकर बैठ जाए। हम इंसानी जामे को रीति-रिवाजों में खत्म कर जाते हैं। मौसम का बीज नाम की कमाई है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैः

कलु आया कलु आया, ईक नाम बोवो नाम बोवो।
आन रुत नाहीं नाहीं मत भ्रम भूलो भूलो।।

नाम के बिना मुक्ति नहीं मिलती। गुरु नानकदेव जी ने हर जगह पहुँचकर लोगों को सुरत-शब्द का अभ्यास बताया। मैं बताया करता हूँ कि महाराज सावन सिंह जी का आगमन उस समय हुआ जब सारी दुनिया गुरु नानकदेव जी की तालीम को भूलकर बाहरमुखी हो गई थी, कर्मकाण्ड में उलझ गई थी। उस समय आवागमन के साधन बहुत कम थे आपके आखिरी दिनों में कारें और जीपें आई। आपने दूर-दराज पैदल चलकर, घोड़ो पर जाकर लोगों को सुरत-शब्द का अभ्यास बताया, सोई ही आत्माओं को जगाया।

सुरत-शब्द से भाव आत्मा का परमात्मा के साथ जोड़ है, आत्मा भी हमारे अंदर है और परमात्मा भी हमारे अंदर है।

कलजुग मह् कीरतन परधाना।। गुरमुख जपीऐ लाय ध्याना।।
आप तरै सगले कुल तारे हर दरगह पत स्यों जाएंदा।।

कलयुग में अगर कोई श्रेष्ठ चीज है मुक्ति दाता है उसे गुरु नानकदेव जी कहीं हरि कीर्तन, कहीं शब्द, कहीं नाम, कहीं रब्बी बानी, धुर की बानी, अमर हुक्म या अकथ कथा कहकर ब्यान करते हैं। कबीर साहब भी उसे नाम या शब्द कहते हैं। हिन्दु महात्मा उसे राम-नाम, राम-धुन, दिव्य-धुनी या आकाशवाणी कहते हैं। मुस्लमान लोग भी उसे ऊँचा-राग, बाँगे-असमानी या कलमा कहकर ब्यान करते हैं। महात्माओं ने उस ताकत को अपनी-अपनी बोलियों में बयान किया है।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि कलयुग में मुक्ति पाने की प्रधान चीज कीर्तन है, वह कीर्तन हमें साधु-सन्तों से मिलता है। गुरुमुख लोग बड़े गौर से अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दों को उतारकर अपनी आत्मा को शब्द के साथ जोड़ लेते हैं और दसवें द्वार में पहुँचकर उस आवाज को सुनते हैं जो सच्चखण्ड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रही है। इसमें औरत-मर्द, बच्चे का सवाल नहीं। जो खुश किस्मत आत्मा परमात्मा के साथ जुड़ जाती है, उसको परमात्मा यह ईनाम देता है कि वह खुद तर जाता है और अनेकों कुलों को तार देता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मामूली कमाई करने वाले की कुल तर जाती है, जो भी उनके संपर्क में आता है वह भी तर जाता है। आलादर्जे के सतसंगियों की कई कुलें तर जाती हैं। वह दरगाह में इज्जत पाता है वहाँ उसका आदर-सत्कार होता हैं।'' गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैः

जगत पास से लेते दान, गोबिंद भक्त को करे सलाम।

धर्मराज की सरकारें, मालिक के प्यारों को सलाम करती हैं उनकी इज्जत करती हैं क्योंकि उन्होनें दुनिया की मान-बड़ाई को

छोड़कर शब्द-नाम की कमाई की। कलयुग में मुक्ति प्राप्त करने का साधन शब्द-नाम की कमाई है।

**खंड पताल दीप सभ लोआ।। सभ कालै वस आप प्रभ कीआ।।
निहचल एक आप अबिनासी सो निहचल जो तिसह् ध्याएंदा।।**

आप प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा ने खण्ड, पाताल, द्वीप दुनिया की रचना करके इसका इंतजाम काल के सुपुर्द कर दिया है।'' हमारे सिख लोग दिन-रात बानी पढ़ते है लेकिन उन्हें काल और दयाल के भेद का पता नहीं है कि हम किसकी भक्ति कर रहे हैं? आमतौर पर दुनियादार लोग उस काल की भक्ति करते हैं जो मौत के बाद हमें चबा जाता हैं। कबीर साहब कहते हैः

जगत चबीना काल का कुछ मुख से कुछ बोल।

काल तैयार बैठा होता है कइयो को खा जाता है इसका हमें पता नहीं। गुरु साहब हमें निश्चय करके बताते हैं कि ये सब रचना रचकर परमात्मा खुद सच्चखण्ड में बैठा है लेकिन उसने इसका इंतजाम काल के सुपुर्द किया हुआ हैं।

स्वामी जी महाराज के सुरत-संवाद में आता है कि एक आत्मा ने सवाल किया, ''आपने काल की रचना क्यों की? अब तो आप मुझे ले जा रहे हैं फिर मौज़ के वस मुझे काल को तो नहीं सौंप देगें?'' आपने कहा, ''एक बार यह मौज़ थी, हमनें काल की रचना जानबूझकर की है। मैं जिन आत्माओं को ले जाऊँगा उन्हें दोबारा काल के हवाले नहीं करूँगा। अगर मैं काल की रचना न रचता तो ये जीव खौफ में नहीं आते। अब जैसे-जैसे किसी के दिल में तड़प उठती है मैं खुद इंसानी जामे में आकर उसकी मदद करके उसे ले जाता हूँ।'' अब गुरु नानकदेव जी काल और दयाल का भेद बताते हैं।

हर का सेवक सो हर जेहा।। भेद न जाणो माणस देहा।।
ज्यों जल तरंग उठह् बहु भांती फिर सललै सलल समाएंदा।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा जब भी दुनिया को रोशनी देने के लिए आया वह किसी न किसी इंसान का तन धारण करके आया। ऋषि-मुनि,सन्त-गुरु, पीर-पैंगबंर आए ये सब इंसानी शक्ल लेकर आए अगर वे गाय-भैंस के चोले में आते तो हम उनकी बोली नहीं समझ पाते, देवी-देवता बनकर आते तो हम उन्हें देख नहीं सकते, वह इंसानों में हमारे जैसा इंसान बनकर आता है।''

सन्त इस दुनिया को सुखों की नगरी बनाने के लिए नहीं आते, यह सुखों और दुखों का देश है। आज तक दुनिया न सुखों की नगरी बनी है और न बन ही सकती है। चाहे हम कितनी भी कोशिश कर लें हम दुनिया के काँटों को नहीं चुग सकते। आप अपने पैरों में पक्के जूते पहन लें आपके ऊपर काँटों का कोई असर नहीं होगा। मालिक के प्यारों और परमात्मा में कोई फर्क नहीं होता। उनका परमात्मा से पानी और बुलबुले का रिश्ता है। पानी पर हवा पड़ती है वह बुलबुला बन जाता है और हवा निकलते ही वह पानी बन जाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

हर हर जन दोय एक है, विभ विचार कुछ नाहे।
जल ते उपजे तरंग ज्यों, जल ही विखे समाहे।।

देखने में भले ही मालिक के प्यारे इंसान की शक्ल रखते हैं लेकिन अंदर से परमात्मा के साथ जुड़े होते हैं।

इक जाचक मंगै दान दुआरै।। जा प्रभ भावै ता किरपा धारै।।
देहो दरस जित मन तृपतासै हर कीरतन मन ठहराएंदा।।

अब आप गुरमुखों की भक्ति का जिक्र करते हैं कि वे परमात्मा के प्यारे हैं। वे परमात्मा के दर से क्या माँगते हैं? वे परमात्मा के दरबार में एक भिखारी की तरह जाते हैं कि परमात्मा आप हमें दर्शन दें। आपके दर्शनों से हमारे अंदर तृप्ति आएगी, शान्ति और सन्तोष आ जाएगा। वे जब भी परमात्मा की भक्ति करते हैं तो परमात्मा से परमात्मा को ही माँगते हैं।

रूड़ो ठाकर कितै वस न आवै।। हर सो किछ करे जे हर किआं संतां भावै।।
कीता लोड़न सोई करायन दर फेर न कोई पाएंदा।।

गुरु नानकदेव जी का कहना है, ''ब्रह्मांड पलट जाए लेकिन महात्मा का कहा गलत नहीं होता क्योंकि उन्होंने तजुर्बा किया होता है। परमात्मा सुंदर है, प्यारा है, वह किसी भी पूजा-पाठ या जप-तप से बस में नहीं आता। परमात्मा को भक्त अपने वश में कर लेते हैं फिर वे जो चाहे परमात्मा से करवा सकते हैं। परमात्मा के भक्त यही अरदास करते हैं कि हे परमात्मा! जिनको हमनें नाम दिया है आप उन्हें अपने दरबार में जगह देना। वे किसी को भी बद्दुआ नहीं देते।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मैंने बाबा जी से वर लिया हुआ है कि मेरी बद्दुआ किसी को न लगे वर बेशक लग जाए।'' सन्त बड़े खुले दिलवाले होते हैं वे देना जानते हैं बख्शिश करना जानते हैं। वे दुनिया का बुरा नहीं माँगते वह तो सिर्फ दुनिया का भला ही माँगते हैं। गुरु गोबिंद जी कहते हैः

सुखी बसे मोरो परिवारा, सेवक सिक्ख सदा करतारा।

सन्त हमेशा अपने बच्चों के लिए परमात्मा से अरदास करते हैं कि तू इन्हें नाम के साथ जोड़े रख, अपने चरणों में जगह दे।

जित्थै औघट आय बनत है प्राणी।। तित्थै हर ध्याईऐ सारिंगपाणी।।
जित्थै पुत्र कलत्र न बेली कोई तित्थे हर आप छडाएंदा।।

आप कहते हैं, ''अगर आप दुख में हैं, कष्ट में हैं या आप किसी जंगल में हैं और आपको शेर घेर लेते हैं कोई आपकी मदद के लिए नहीं पहुँच सकता उस समय आप अपने गुरु को इस तरह याद करें जिस तरह पपीहा पानी को याद करता है। जिस जगह आपकी मदद पुत्र, भाई या बन्धु कोई नहीं करता वहाँ गुरु पहुँचता है। यह उसका बिरद है,वह लाज रखता है; हर जगह पहुँचता है। हम अपने दिल में झाँककर देखें! क्या हमारे दिल में गुरु के लिए इतना प्यार, इतनी तड़प है?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सब कुछ अपना इक राम पराया।
सारा दिन मजदूरी करे हर सिमरन वेले बज्र सिर पड़े।।

हम सारा दिन घर के कामकाज में मस्त हैं लेकिन भजन के लिए हमारे पास समय ही नहीं। महात्मा हमें समझाते हैं कि जहाँ पर आपका कोई साथी नहीं पहुँचता वहाँ परमात्मा को याद करें।

स्न 1947 का वाक्या है कपूरथला के नजदीक बिला कोठी एक गाँव है। वहाँ पर एक मिस्त्री महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा अच्छा प्रेमी था। वह डेरा ब्यास सतसंग सुनने चला गया। गुरु की मन-मोहिनी मूरत आँखों के आगे आई वह उस मूरत के साथ जुड़ गया और वापिस आना भूल गया। शाम हो गई अंधेरा हो गया। आज तो उस जगह बहुत सड़के हैं लेकिन मैं जिस समय का जिक्र कर रहा हूँ उस समय वहाँ कोई सड़क नहीं थी बहुत खस्ता रास्ता था, बेई नदी के आस-पास बहुत घना जंगल था। अब तो वहाँ लोगों ने जमीनों को उपजाऊ बना लिया है।

मैं खुद उस समय बिला कोठी में था। रात को जब उसके मन में ख्याल उठा तो वह ब्यास से चल पड़ा, रात अंधेरी थी। सभानपुर तक जी. टी. रोड आती थी लेकिन सभानपुर से आगे उस कोठी के लिए कोई सड़क नहीं थी। वह जंगल से होकर गया चाँद भी निकला हुआ था लेकिन वह रास्ता भूल गया। महाराज सावन सिंह जी बुजुर्ग के भेष में आए वैसे भी आप उस समय बुजुर्ग थे, आप हाथ में छड़ी रखते थे। महाराज सावन ने बोला, ''बेटा! तुम रास्ता भूल गए हो इधर से जाओ। वह थोड़ी दूर गया फिर रास्ता भूल गया, उसे तकरीबन तीन-चार घंटे लग गए।'' आखिर में जब वह गाँव दिखाई देने लगा तो महाराज जी बोले, ''वह रहा तुम्हारा घर।''

वह मिस्त्री एक चक्की पर काम करता था। मिस्त्री ने वहाँ जाकर माफी माँगी कि मैं रात को सतसंग में चला गया था और काम से गैर हाजिर हो गया मुझे माफ कर दें। चक्की वाले ने कहा, ''मैं तुझे किस बात की माफी दूं? तू सारा काम करके मुझे पैसे देकर गया है देख! तूने सारा हिसाब रजिस्ट्रर में लिखा है।''

वह समझ गया और महाराज सावन सिंह जी के आगे जाकर रोया कि आपने किस तरह मेरी रक्षा की। आप सारी रात मुझे रास्ता भी बताते रहे और मिस्त्री का रुप धारण करके मेरी जगह ड्यूटी भी दी। अगर आप भरोसे से गुरु को याद करेंगे तो वह आपका काम खुद करने आएगा।

मैं कहा करता हूँ कि रात का समय हो आँधी-तुफान चल रहा हो और आप बाहर न निकल सकते हों, आप प्यार से अपने गुरु को याद करें वह हाजिर होगा। आपका गुरु आपके पास, आपके अंदर है अगर फर्क है तो हमारी मजदूरी में, हमारी याद में फर्क है। बुल्लेशाह ने कहा थाः

ओह प्रभ साड्डा सखी है, असी सेवा कन्नियों सूम।

वड्डा साहिब अगम अथाहा।। क्यों मिलीऐ प्रभ बेपरवाहा।।
काट सिलक जिस मारग पाए सो विच संगत वासा पाएंदा।।

परमात्मा बड़ा है, अगम है उसे किसी की परवाह नहीं उसे कोई गम नहीं, वह खुद मुख्तियार है। परमात्मा जिसे अपने साथ मिलाना चाहता है उस पर बख्शिश करता है उसके दुनिया के बंधन तोड़कर उसे सतसंग में लेकर आता है। महात्मा सतसंग उसे कहते हैं जिसमें सिर्फ नाम और शब्द की महिमा हो।

सतसंग में महात्मा हमें गुजरे हुए राजा-महाराजाओं की कहानियां नहीं सुनाते, वे हमारे अंदर शब्द-नाम को जपने का शौंक, विरह और तड़प पैदा करते हैं। जिस पर परमात्मा दया करता है उसे सतसंग में लेकर आता है।

हुकम बूझै सो सेवक कहीऐ।। बुरा भला दोए समसर सहीऐ।।
हौमैं जाय ता एको बूझै सो गुरमुख सहज समाएंदा।।

मैं बताया करता हूँ कि नामलेवा को कुछ शर्तों का अवश्य पालन करना पड़ता है। यारों-दोस्तों और परिवार के ताने-मेहणे सहने पड़ते हैं। संसार की निन्दा-चुगली सहनी पड़ती है। अपनी पदवी का ख्याल छोड़ना पड़ता हैं, आदर-मान छोड़ना पड़ता है और अंहकार से बचना पड़ता है। अंहकारी यह सोचता है कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह एकदम सही है। अगर नामलेवा अपने अंदर मालिक के शब्द को प्रकट कर लेता है तो वह सबके अंदर उस परमात्मा को देखता है। वह पत्ते-पत्ते में परमात्मा को देखता है और सोचता है अगर मैं किसी के साथ बुरा सुलूक करता हूँ, किसी का दिल दुखाता हूँ तो मैं परमात्मा का दिल दुखा रहा हूँ।

हर के भगत सदा सुखवासी।। बाल सुभाय अतीत उदासी।।
अनिक रंग करेंह् बहु भांती ज्यों पिता पूत लाडाएंदा।।

मालिक के प्यारे गुरु के दरबार में चालीस दिन के बच्चे जैसे बनकर रहते हैं अगर हम चालीस दिन के बच्चे जैसे बनकर रहते हैं तो गुरु भी उसी तरह प्यार करता है। जैसे पिता बच्चे को उठाते समय घबराता नहीं बेशक वह गंदा हो पिता उसे साफ कर लेता है।

मैं आपको बताया करता हूँ कि मेरी जिंदगी में मेरी माता से मुझे अधिक से अधिक प्यार मिला। माता तो सबको मिलती है लेकिन मेरी माता मुझे बहुत प्यार करती थी, उसने मेरी बहुत देखभाल की। दूसरा प्यार मुझे मेरे गुरु से मिला जिसने मेरी माता के प्यार को भुला दिया। मेरा गुरु कभी मुझे अपनी गोद में बिठाता जिस तरह बच्चे को बिठाते हैं कभी मेरे मुँह में अपने हाथ से निवाला डालता। मैं उसके पास बालक की तरह रहता था। वह जब मेरे पास आता उस समय मैं आधा पागल हो जाता था। मैं यही देखता था कि गुरु प्यार करता है या नहीं? कोई ऐसा बने फिर देखे! कि गुरु लाड़-लड़ाता है या नहीं?

अगम अगोचर कीमत नहीं पाई।। ता मिलीऐ जा लए मिलाई।।
गुरमुख प्रगट भया तिन जन कौ जिन धुर मस्तक लेख लिखाएंदा।।

वह अगम है अगोचर है इन आँखों से नहीं देखा जा सकता। जिनके अंदर इतनी ताकत प्रकट होती है वे धुर से उसी मंडल से आते हैं। उनके कर्मों में लेख लिखा जाता है परमात्मा उनके अंदर सारी बरकतें लेकर प्रकट हो जाता है। ऐसी आत्माएं परमात्मा की भेजी हुई संसार में आती हैं, उनके ऊपर न गरीबी का असर होता है न अमीरी का असर होता है।

अगर वे अमीर घर में पैदा होते हैं तो वे अमीरी को लात मारकर परमात्मा की खोज में लग जाते हैं। जब तक उनकी खोज पूरी नहीं होती वे अपनी खोज जारी रखते हैं वे बिल्कुल भी चैन से नहीं बैठते। अगर वे गरीब घर में पैदा होते हैं तब भी उन्हें कोई परवाह नहीं होती। वे रूपये-पैसे और जायदादों की खातिर कोर्ट में नहीं जाते क्योंकि उनका मकसद तो परमात्मा को प्राप्त करना होता है। उनके अंदर उनका गुरु सारी बरकतें लेकर बैठ जाता है, जहाँ गुरु परमात्मा आकर बैठ जाता है वहाँ किस चीज की कमी है।

तू आपे करता कारण करणा।। सृस्ट उपाय धरी सभ धरणा।।
जन नानक सरण पया हर दुआरै हर भावै लाज रखाएंदा।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''तू जो करना चाहे कर सकता है। चंद्रमा, सूरज, सितारे, धरती सब कुछ तूने ही पैदा किए हैं। मैं तेरे द्वारे, तेरी शरण में आया हूँ अगर तुझे ठीक लगे तू मेरी लाज रख ले।'' कितने ही चोटी के महात्मा हुए उन्होंने कितनी कमाई की फिर भी उनमें कितनी नम्रता और आजजी है। वे कहते हैं कि हम तेरे द्वार पर आए हैं।

गुरु नानकदेव जी ने हमें हर तरह से समझाया कि हमें परमात्मा की भक्ति क्यों करनी है और इंसानी जामे की क्या अहमियत हैं? हम कर्मकांडो में उलझे हुए हैं। शब्द-नाम मौसम का बीज है और कर्मकांड-रीति-रिवाज बे-मौसमी बीज है। हमें चाहिए कि हम परमात्मा की भक्ति करके इंसानी जामें को सफल बनाए।

27 मई 1985

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश

भजन–अभ्यास

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान 31 अगस्त 1985

बहुत से प्रेमी ऐसे हैं जिन्हें इस जगह के दर्शन करने का मौका मिला है, मैंने यहाँ अभ्यास किया था। जब मैंने अभ्यास कर लिया तो मेरा विचार इस जगह को समाप्त कर देने का था लेकिन पश्चिम के कुछ प्रेमियों ने अपना जातिय तजुर्बा बताया इसलिए इस जगह को कायम रखा हुआ है।

पश्चिम के कई बुजुर्ग प्रेमियों ने बताया कि उनका दस–दस साल, पाँच–पाँच साल का शब्द बंद था उस फट्टे पर माथा टेकने से उनका शब्द खुल गया। उनकी अर्ज की वजह से ही मैंने इस जगह को

बंद नहीं किया। यह सच्चाई है जहाँ कोई इत्तर वाला बैठता है उस जगह उतनी देर सुगंधी रहती है जब तक लोग वहाँ गंद नहीं फैंकते। जब लोग गंद फैंकने लग जाते हैं तो वहाँ की सुंगधी धीरे–धीरे समाप्त हो जाती है।

सन्त सतसंग में बताते हैं कि सन्त देने को तो सब कुछ देते हैं लेकिन कद्र के बिना कोई प्राप्त नहीं कर सकता। प्रेमियों ने महाराज सावन सिंह जी से कहा कि आपके लिए और मकान बनाना है तब महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी के मकान के मलबे से नीचे चबूतरा बना दिया और उसके ऊपर मकान बनाया।

महाराज सावन को उस मकान की कद्र थी कि इसमें बैठकर महापुरुष ने भजन–अभ्यास किया है लेकिन उनके जाने के बाद हम उस जगह पर इतना गंद फैंक देते हैं। लोग वहाँ जाकर ही शान्ति ढूंढते हैं बाद में वहाँ से क्या मिलेगा? आपको पता है जो कमाई करता है वह मन के साथ संघर्ष करता है, संघर्ष करके ही कामयाब होता है।

आपने गुफा में श्रद्धा और प्यार से जाना है। बहुत सी लड़कियां अंदर जाकर रोना शुरू कर देती हैं यह अच्छा नहीं होता, माथा टेककर वापिस आ जाओ। पहले बीबीयां जाएंगी जब बीबीयां वापिस आ जाएंगी फिर मर्द जाएंगे, मर्द उतनी देर बैठकर अपना सिमरन करें। पहले बच्चों वाली बीवीयां जाएं ताकि उन्हें संघर्ष न करना पड़े। बच्चों को ज्यादा देर खड़े रहने में दिक्कत होती है।

अभी लाईन लग जाएगी। मैं आशा करता हूँ कि आप अनुशासन में ही वहाँ जाएं, वापिस आकर जो काम आपका है जिसे बच्चे संभालने हैं वे बच्चे संभालें। जिनकी दाल साफ करने की सेवा है वे दाल साफ करें, जिन्हें लंगर की सेवा करनी है वे लंगर की सेवा करें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

कथनी-करनी

बाँझ झुलावै पालना, बालक नहिं माहीं।
वस्तु विहीना जानिये, जहाँ करणी नाहीं।।

अगर कोई औरत बच्चे के बिना झूले को झुलाए तो देखने वालों को अचरज होगा कि यह झूला किसे झुला रही है? गुरु नानकदेव जी ने अपनी बानी में कथनी वालों की एक कथा बताई है।

एक बहुत होशियार जुलाहा था, उसने सोचा किसी तरीके से राजा से दोस्ती की जाए तो बहुत धन मिल जाएगा। उस जुलाहे ने राजा के पास जाकर कहा, ''मुझे बहुत अच्छा कपड़ा बुनना आता है, मैं आपके लिए एक ऐसी पगड़ी बनाऊँगा जो कभी किसी ने न पहनी हो।'' राजा बहुत खुश हुआ और उसने जुलाहे से पूछा, ''तुझे कितने पैसे चाहिए?'' जुलाहे ने जितने पैसे माँगे राजा ने उसे उतने पैसे दे दिए। जुलाहा उन पैसों से ऐश करता रहा।

इस तरह छह महीने बीत गए। एक दिन राजा ने सोचा कि जुलाहा अभी तक पगड़ी लेकर नहीं आया। राजा ने जुलाहे को बुलवाया तो जुलाहे ने कहा, ''मैं सूत तो ले आया हूँ लेकिन मुझे रंग के लिए और पैसे चाहिए।'' राजा ने उसे और पैसे दे दिए। इस तरह दो साल बीत गए। राजा ने उसे फिर बुलवाया तब जुलाहे ने कहा, ''मैं अभी ताना बुन रहा हूँ मुझे कुछ पैसे और चाहिए।'' इसी तरह कई साल बीत गए, जुलाहा पैसे लेकर ऐश करता रहा।

एक दिन जुलाहे ने राजा के पास जाकर कहा, ''आपकी पगड़ी तैयार है लेकिन जो हराम का होगा उसे यह पगड़ी नजर

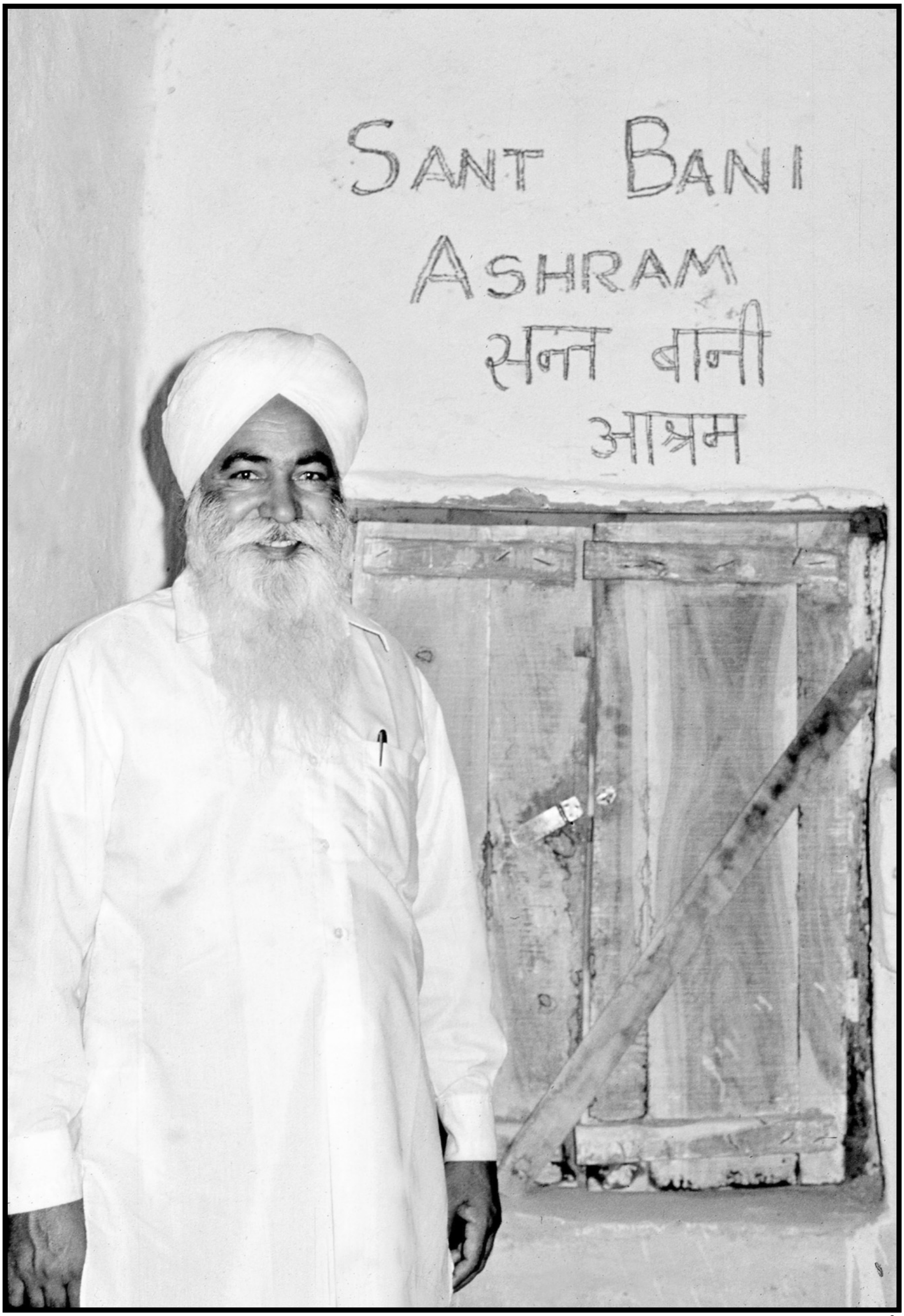
SANT BANI
ASHRAM
सन्त बानी
आश्रम

नहीं आएगी जो हलाल का होगा उसे ही यह पगड़ी नजर आएगी।'' राजा ने अपने वजीर को पगड़ी लाने के लिए भेजा। वजीर राजा की पगड़ी को थाल में रखकर जुलूस की शक्ल में लेकर आया लेकिन थाल में कोई पगड़ी नहीं थी। अगर अब राजा यह कहे कि थाल में पगड़ी नहीं है तो वह हराम का बनता था इसलिए उसने कहा कि पगड़ी बहुत सुंदर है। राजा ऐसे ही इशारों से सिर पर पगड़ी बाँधने लगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक कूड़ा कत्या, कूड़ा तन्या तान।

वह जुलाहा ताना बुनना नहीं जानता था, वह झूठ बोलता था। कथनी करने वालों की यही हालत होती है, हम उनके पास जाते हैं तो वे हमें ऐसे ही झूठे लारे लगा देते हैं।

प्यारेयो! कथनी की नहीं करनी की जरूरत है अगर कोई आदमी नदी के बाहर खड़ा रहे तो क्या वह पार हो जाएगा? उसे नदी पार करने के लिए प्रैक्टिस करनी पड़ेगी, नाव चलानी सीखनी पड़ेगी। हम मेहनत के बिना खेती नहीं कर सकते, डॉक्टर या वकील नहीं बन सकते। मेहनत के बिना दुनिया का कोई व्यापार नहीं हो सकता तो क्या मेहनत के बिना परमात्मा की भक्ति हो जाएगी?

बहुत से प्रेमी बड़े जोश से नाम ले लेते हैं फिर कहते हैं अभी समय नहीं आया, सतगुरु अपने आप नाम जपा लेगें, सतगुरु ने ही पाप छुड़वाने हैं। कई लोग सतगुरु की महिमा तो गाते हैं लेकिन जब मीट-शराब छोड़ने या मेहनत करके खाने का सवाल आता है तो ऐसे लोगों का जोश ठंडा पड़ जाता है। सन्तों ने करनी की होती है। सन्तमत करनी का मत है कथनी का नहीं।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

29, 30 नवम्बर व 01 दिसम्बर 2019

02 से 06 फरवरी 2020

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

भूरा भाई आरोग्य भवन,

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर टाकीज)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067

98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00

8 जनवरी से 12 जनवरी 2020